MODEL PAPER – 5

- परीक्षार्थियों के लिये निर्देश MODEL PAPER – 1 के समान होगा।

खण्ड–अ (वस्तुनिष्ठ प्रश्न)

प्रश्न संख्या 1 से 100 तक के प्रत्येक वस्तुनिष्ठ प्रश्न के साथ चार विकल्प दिये गए हैं, जिनमें से कोई एक सही है। इन 100 प्रश्नों में से किन्हीं 50 प्रश्नों के अपने द्वारा चुने गए सही विकल्प को OMR उत्तर-पत्रक पर चिह्नित करें। $50 \times 1 = 50$

1. "मृत्यु के कुछ समय पहले स्मृति बहुत साफ हो जाती है।' किस पठित पाठ की पंक्ति है ?
(A) उसने कहा था (B) शिक्षा
(C) ओ सदानीरा (D) अर्धनारीश्वर

2. "भगति विमुख जे धर्म सो सब अधर्म करि गाए।" किस पठित पाठ की पंक्ति है ?
(A) छप्पय (B) कवित्त (C) कड़बक (D) अधिनायक

3. मुक्तिबोध का पूरा नाम है
(A) जगनंद माधब (B) गजानन माधव मुक्तिबोध
(C) जगदानंद माधव (D) जगदीश माधव

4. नामवर सिंह का जन्म-स्थान कहाँ था ?
(A) वाराणसी (B) लखनऊ (C) पटना (D) बेगूसराय

5. ओमप्रकाश वांल्मीकि का जन्म कब हुआ था ?
(A) 1950 (B) 1949 (C) 1975 (D) 1905

6. मलयज का जन्म कब हुआ था ?
(A) 1938 (B) 1940 (C) 1942 (D) 1935

7. रघुवीर सहाय का निधन कब हुआ था ?
(A) 1990 (B) 1980 (C) 1985 (D) 1991

8. ज्ञानेंद्रपति का जन्म कब हुआ था ?
(A) 1940 (B) 1950 (C) 1942 (D) 1948

9. सुभद्रा कुमारी चौहान का निधन कब हुआ था ?
(A) 1948 (B) 1942 (C) 1945 (D) 1946

10. 'हँसते हुआ अकेलापन' हिन्दी साहित्य की कौन-सी विधा है ?
(A) डायरी (B) यात्रा वृत्तांत (C) आत्मकथा (D) शब्दचित्र

11. 'कड़बक' में किसकी महिमा का बखान है ?
(A) मनुष्य (B) ईश्वर (C) प्रेम (D) दानव

12. निम्न में से गद्य कविता कौन है ?
(A) अधिनायक (B) गाँव का घर
(C) प्यारे नन्हें बेटे को (D) हार-जीत

13. उषा का जादू कब टूटता है ?
(A) सूर्यास्त के समय (B) सूर्योदय के समय
(C) दोपहर के समय (D) इनमें से कोई नहीं

14. 'कलीराम' किस पठित पाठ से संबंधित है ?
(A) जूठन (B) तिरिछ (C) रोज (D) शिक्षा

15. सूरदास के दीक्षा गुरु का नाम क्या है ?
(A) बल्लभाचार्य (B) सहजानन्द (C) रामानन्द (D) विट्ठलनाथ

16. संत तुलसीदास किस प्रकार के कवि हैं ?
(A) पृथक्तावादी (B) छायावादी (C) समन्वयवादी (D) रहस्यवादी

17. पठित पाठ में 'तिरिछ' क्या है ?
(A) विषैला छिपकली (B) षडयंत्रकारी
(C) नक्सली (D) अनिष्टकारी जीव

18. सूरदास की पठित रचना में किस रस की प्रधानता है ?
(A) शृंगार रस की (B) वात्सल्य रस की
(C) वीर रस की (D) वीभत्स रस की

19. निम्न में से 'राष्ट्रकवि' की उपाधि किसे मिली है ?
(A) रामधारी सिंह दिनकर (B) नागार्जुन
(C) प्रेमचंद (D) बिहारीलाल

20. निम्न में से 'प्रेम की पीर' के कवि कौन हैं ?
(A) जायसी (B) कबीरदास (C) तुलसीदास (D) सूरदास

21. 'कविता के नए प्रतिमान' के रचयिता कौन है ?
(A) नामवर सिंह (B) भगत सिंह
(C) मलयज (D) ओमप्रकाश वाल्मीकि

22. 'उसने कहा था' शीर्षक कहानी में किसकी प्रधानता है ?
(A) धर्म की (B) कर्म की (C) चरित्र की (D) भाव की

23. गंडकी नदी किस पठित पाठ से संबंधित है ?
(A) तिरिछ (B) ओ सदानीरा (C) शिक्षा (D) बातचीत

24. तिरिछ का किस पठित पाठ से संबंध है ?
(A) शिक्षा (B) बातचीत
(C) ओ सदानीरा (D) इनमें से कोई नहीं

25. भूषण की रचना में किस रस की प्रधानता है ?
(A) हास्य रस (B) वीभत्स रस (C) वीर रस (D) शृंगार रस

26. जयशंकर प्रसाद का किस वाद से संबंध है ?
(A) प्रयोगवाद (B) प्रगतिवाद (C) छायावाद (D) नकेनवाद

27. 'गैंग्रीन' का संबंध किस पाठ से है ?
(A) उसने कहा था (B) रस्सी का टुकड़ा
(C) तिरिछ (D) रोज

28. भगत सिंह की माता का नाम है
(A) विद्यावती (B) फूलवती (C) कलावती (D) सुन्दरवती

29. भगत सिंह के पिता का नाम है
(A) सरदार किशन सिंह (B) सरदार बिशण सिंह
(C) अजीत सिंह (D) सरदार स्वर्ण सिंह

30. रामधारी सिंह दिनकर की पत्नी का नाम है
(A) श्यामवती देवी (B) विद्या देवी
(C) नारायणी देवी (D) रत्नावली देवी

31. ओमप्रकाश वाल्मीकि के पिता का नाम है
(A) छोटनलाल (B) ललनराम (C) रतनलाल (D) जगतराम

32. ओमप्रकाश वाल्मीकि की माता का नाम है
(A) मकुंदी देवी (B) सुभद्रा देवी (C) कल्पना देवी (D) सपना देवी

33. मुक्तिबोध की माता का नाम है
(A) पार्वती बाई (B) गौरी बाई (C) मंगली देवी (D) सुनयना देवी

34. चन्द्रधर शर्मा गुलेरी का जन्म कहाँ हुआ था ?
(A) जयपुर (B) वाराणसी (C) देहरादून (D) चंडीगढ़

35. चन्द्रधर शर्मा गुलेरी के पिता का क्या नाम था ?
(A) पं० हरिराम (B) पं० शिवराम (C) पं० गणेशराम (D) पं० आत्माराम

36. तुलसीदास का जन्म स्थान कहाँ है ?
(A) राजापुर, उत्तर प्रदेश (B) सिमरिया, बिहार
(C) तिकवाँपुर, उत्तर प्रदेश (D) पथरगामा, झारखंड

37. ज्ञानेन्द्रपति का जन्म-स्थल कहाँ है ?
(A) गोड्डा, झारखंड (B) बाँदा, उत्तर प्रदेश
(C) बेगूसराय, बिहार (D) ग्वालियर, मध्य प्रदेश

38. गजानन माधव मुक्तिबोध का जन्म-स्थान है
(A) श्योपुर, ग्वालियर (B) पथरगामा, गोड्डा
(C) निहालपुर, इलाहाबाद (D) सीही, दिल्ली

39. सुभद्रा कुमारी चौहान का जन्म-स्थान है
(A) निहालपुर, उत्तर प्रदेश (B) राजापुर, उत्तर प्रदेश
(C) जायस, अमेठी (D) जीअनपुर, वाराणसी

40. रामधारी सिंह दिनकर के माता-पिता का नाम है
(A) मनरूप देवी एवं रवि सिंह (B) हुलसी एवं शिवराम
(C) पार्वती देवी एवं बेनीभट्ट (D) व्यंती देवी एवं हीरानंद शास्त्री

41. अज्ञेय के माता-पिता का नाम है
(A) विद्यापति एवं रवि (B) व्यंती देवी एवं हीरानंद शास्त्री
(C) प्रभावती एवं त्रिलोकीनाथ (D) संजीवम्मा एवं नारायणा

42. जे० कृष्णमूर्ति के माता-पिता का नाम है
(A) संजीवम्मा एवं नारायणा जिद्दू (B) मनरूप देवी एवं रवि सिंह
(C) धिराज कुँवर एवं रामनाथ सिंह (D) विद्यापति एवं रवि सिंह

43. बालकृष्ण भट्ट के माता-पिता का नाम है
(A) पार्वती देवी एवं बेनी प्रसाद भट्ट
(B) मनरूप देवी एवं रवि सिंह
(C) हुलसी एवं आत्माराम (D) प्रभावती एवं रवि सिंह

44. जयशंकर प्रसाद के पिता का नाम है
(A) देवी प्रसाद साहु (B) रविरंजन साहु
(C) आत्माराम साहु (D) शिवराम साहु

45. तुलसीदास के दीक्षा गुरु कौन थे ?
(A) नरहरिदास (B) सुखमणिदास
(C) बल्लभाचार्य (D) श्री नारायणदास

46. "जाड़ा क्या है, मौत है और 'निमोनिया' से मरने वालों को मुरब्बे नहीं मिला करते" यह किस पठित पाठ की पंक्ति है ?
(A) उसने कहा था (B) रोज
(C) तिरिछ (D) प्रगीत और समाज

47. 'सूबेदारनी' किस कहानी की पात्रा है ?
(A) रोज (B) उसने कहा था
(C) शिक्षा (D) अर्धनारीश्वर

48. "नारी और नर एक ही द्रव्य की ढली दो प्रतिमाएँ हैं।" किसकी उक्ति है ?
(A) रामधारी सिंह दिनकर (B) नागार्जुन
(C) प्रेमचंद (D) नामवर सिंह

49. "कामिनी तो अपने साथ यामिनी की शांति लाती है।" यह पंक्ति किस पठित पाठ की है ?
(A) अर्धनारीश्वर (B) प्रगीत और समाज
(C) तिरिछ (D) उसने कहा था

50. "तेरी कुड़माई हो गई ?" किस पठित पाठ की पंक्ति है ?
(A) उसने कहा था (B) रोज
(C) जूठन (D) तिरिछ

51. 'त्राहि-त्राहि करना' मुहावरे का अर्थ है
(A) बहुत दुखी होना (B) नाराज होना
(C) क्रोध करना. (D) रोना

52. 'कान देना' मुहावरे का अर्थ है
(A) लज्जित होना (B) प्रतीक्षा करना
(C) ध्यान देना (D) बहकाना

53. 'घी के दीये जलाना' मुहावरे का अर्थ है
(A) रोशनी करना (B) मन चंचल होना
(C) आनन्द मनाना (D) प्रकाशित करना

54. 'एक पंथ दो काज' मुहावरे का अर्थ है
(A) दो कार्य एक साथ होना (B) त्रिमुहानी
(C) द्विमुहानी (D) कामकाजी होना

55. 'जी चुराना' मुहावरे का अर्थ है
(A) दिल चुरा लेना (B) किसी काम से भागना
(C) दिल हर लेना (D) प्यार होना

56. 'लकीर का फकीर होना' मुहावरे का अर्थ है
(A) लम्बा होना (B) परम्परावादी होना
(C) फकीर होना (D) आधुनिक होना

57. 'नायक' शब्द का संधि-विच्छेद है
(A) ने + अक (B) नै + अक (C) निः + अक (D) ना + यक

58. 'उद्गम' शब्द का संधि-विच्छेद है
(A) उत् + गम (B) उद् + गम (C) उत + अगम (D) उत् + आगम

59. 'जगदानन्द' शब्द का संधि-विच्छेद है
(A) जगत् + आनन्द (B) जग + आनन्द
(C) जग + नन्द (D) जगदा + नन्द

60. 'महाशय' शब्द का संधि-विच्छेद है
(A) महा + शय (B) महा + आशय
(C) महा + अशय (D) मह + आशय

61. 'मनोहर' शब्द का संधि-विच्छेद है
(A) मनो + हर (B) मनः + हर (C) मनः + हर (D) मनो + अहर

62. 'कमलेश' शब्द का संधि-विच्छेद है
(A) कमल + ऐश (B) कमल + अश
(C) कमल + लेश (D) कमल + ईश

63. 'जगत' शब्द का विशेषण है
(A) जगदीश (B) जागतिक (C) जग (D) जागना

64. 'आधार' शब्द का विशेषण है
(A) अवरोध (B) आधारित (C) आधारिक (D) आधारणीय

65. 'संस्कृत' शब्द का विशेषण है
(A) संस्कृतेय (B) संस्कृति (C) सांस्कृतिक (D) संस्कृती

66. 'अग्नि' शब्द का विशेषण है
(A) आग (B) आग्नेय (C) अग्निय (D) आगजनी

67. 'दिन' शब्द का विशेषण है
(A) सुदिन (B) दैनिक (C) दिनभर (D) दिवस

68. 'फीसदी' शब्द में उपसर्ग है
(A) फी (B) फीस (C) फिर (D) फ

69. 'बिन देखा' शब्द में उपसर्ग है
(A) बिन (B) बीन (C) बिना (D) बि

70. 'नाचीज' शब्द में उपसर्ग है
(A) न (B) ना (C) नो (D) नाच

71. 'पढ़नेवाला' शब्द में प्रत्यय है
(A) वला (B) वाला (C) बाला (D) बाल

72. 'खिलाड़ी' शब्द में प्रत्यय है
(A) आड़ी (B) अड़ी (C) ड़ी (D) ड़

73. 'दिखावट' शब्द में प्रत्यय है
(A) आवट (B) वट (C) अवट (D) वाट

74. निम्न में शुद्ध शब्द है
(A) संसार (B) शीक्षक (C) वीद्यार्थी (D) वाकय

75. निम्न में शुद्ध शब्द है
(A) पुरुष (B) निलकंड (C) ओरत (D) पारक

76. भूतकाल के कितने भेद हैं ?
(A) पाँच (B) छः (C) आठ (D) दस

77. 'सभापति' शब्द का स्त्रीलिंग रूप है
(A) सभापत्नी (B) सभानेत्री (C) सभाध्यक्षी (D) अभिनेत्री

78. 'नायक' शब्द का स्त्रीलिंग रूप है
(A) नायका (B) नायीका (C) नायिका (D) नायिकी

79. 'अधिनायक' शब्द में उपसर्ग है
(A) अधी (B) आधी (C) अधि (D) आदि

80. 'अधिकार' शब्द में उपसर्ग है
(A) आध (B) अध् (C) अधि (D) आधि

81. 'लिखाई' शब्द में प्रत्यय है
(A) इ (B) आई (C) अई (D) ई

82. 'दौड़नेवाला' शब्द में प्रत्यय है
(A) बाला (B) वाल (C) वाला (D) बाल

83. 'मरता' शब्द में प्रत्यय है
(A) ता (B) त (C) ते (D) तो

84. 'खिलौना' शब्द में प्रत्यय है
(A) ओन (B) ओना (C) औना (D) ऑन

85. 'फ' वर्ण का उच्चारण-स्थान है
(A) दंत (B) तालु (C) ओष्ठ (D) मूर्द्धा

86. 'म' वर्ण का उच्चारण-स्थान है
(A) ओष्ठ (B) कंठ (C) तालु (D) दंत

87. 'थ' वर्ण का उच्चारण-स्थान है
(A) ओष्ठ (B) दंत (C) मूर्द्धा (D) तालु

88. 'ध' वर्ण का उच्चारण-स्थान है
(A) दंत (B) तालु (C) ओष्ठ (D) कंठ

89. 'ग' वर्ण का उच्चारण-स्थान है
(A) दंत (B) ओष्ठ (C) मूर्द्धा (D) कंठ

90. 'भ' वर्ण का उच्चारण-स्थान है
(A) ओष्ठ (B) दंत (C) तालु (D) कंठ

91. 'त' वर्ण का उच्चारण-स्थान है
(A) तालु (B) दंत (C) ओष्ठ (D) कंठ

92. 'ढ' वर्ण का उच्चारण-स्थान है
(A) मूर्द्धा (B) कंठ (C) ओष्ठ (D) दंत

93. 'ख' वर्ण का उच्चारण-स्थान है
(A) कंठ (B) दंत (C) मूर्द्धा (D) ओष्ठ

94. 'छ' वर्ण का उच्चारण-स्थान है
(A) कंठ (B) तालू (C) ओष्ठ (D) मूर्द्धा

95. 'यमुना' शब्द कौन संज्ञा है ?
(A) जातिवाचक (B) व्यक्तिवाचक (C) द्रव्यवाचक (D) समूहवाचक

96. 'मंत्री' शब्द कौन संज्ञा है ?
(A) जातिवाचक (B) व्यक्तिवाचक (C) द्रव्यवाचक (D) समूहवाचक

97. 'मिठास' शब्द कौन संज्ञा है ?
(A) व्यक्तिवाचक (B) भाववाचक (C) द्रव्यवाचक (D) समूहवाचक

98. 'गुच्छा' शब्द कौन संज्ञा है ?
(A) समूहवाचक (B) जातिवाचक (C) द्रव्यवाचक (D) भाववाचक

99. 'मोती' शब्द कौन संज्ञा है ?
(A) समूहवाचक (B) व्यक्तिवाचक (C) द्रव्यवाचक (D) भाववाचक

100. 'चावल' शब्द कौन संज्ञा है ?
(A) द्रव्यवाचक (B) भाववाचक (C) समूहवाचक (D) जातिवाचक

खण्ड–ब (विषयनिष्ठ प्रश्न)

1. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबंध लिखिये : $1 \times 8 = 8$
(i) प्रिय कवयित्री : सुभद्रा कुमारी चौहान
(ii) मेरे प्रिय नेता : महात्मा गाँधी
(iii) पुस्तकालय
(iv) स्वास्थ्य और योग
(v) पर्यावरण
(vi) छात्र और अनुशासन

2. निम्नलिखित में से किन्हीं दो अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या करें : $2 \times 4 = 8$

(i) "वर-घर देखकर ही क्या करना है, कुंती ?
मानक आए तो कुछ हो भी। तुझें पता ही है, आजकल लोगों के हाथ कितने बंधे हुए हैं।"

(ii) प्रत्येक पत्नी अपने पति को बहुत कुछ उसी दृष्टि से देखती है जिस दृष्टि से लता अपने वृक्ष को देखती है।

(iii) "इस संसार से संपृक्ति एक रचनात्मक कर्म है। इस कर्म के बिना मानवीयता अधूरी है।"

(iv) "यह लगता है एक बार यदि
पल भर को उसको पा जाती
जी से लगा प्यार से सर
सहला सहला उसको समझाती।"

3. नया खाता खुलवाने हेतु बैंक मैनेजर के पास आवेदन-पत्र लिखें। $1 \times 5 = 5$

अथवा

वार्षिक परीक्षा की तैयारी का उल्लेख करते हुए अपनी माताजी को एक पत्र लिखें।

4. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं पाँच के उत्तर दें : $5 \times 2 = 10$
(i) उषा का जादू कैसा है ?
(ii) हिन्दी कविता के इतिहास में प्रगीतों का स्थान निरूपित करें।
(iii) 'चौर' और 'मन' किसे कहते हैं ?
(iv) कृष्ण खाते समय क्या-क्या करते हैं ?
(v) 'बातचीत' शीर्षक निबंध की क्या विशेषताएँ हैं ?
(vi) 'गाँव का घर' शीर्षक कविता में पंच परमेश्वर के खो जाने को लेकर कवि क्यों चिंतित है ?
(vii) शिवाजी की तुलना भूषण ने किन-किन से की है ?
(viii) तुलसीदास को किस वस्तु की भूख है ?
(ix) समूची दुनिया में जन-जन का युद्ध क्यों चल रहा है ?
(x) तुलसीदास ने 'दीनता और दरिद्रता' दोनों का प्रयोग क्यों किया है ?

5. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन का उत्तर दें : $3 \times 5 = 15$
(i) "कैसी मृत्यु सुन्दर है ? आत्महत्या कायरता है।" पठित पाठ के आधार पर इसकी समीक्षा करें।
(ii) 'उसने कहा था' कहानी के शीर्षक की सार्थकता पर विचार करें।
(iii) माँ है, पर उसमें किसी भी सिपाही की माँ को ढूँढा जा सकता है, कैसे ?
(iv) 'पुत्र-वियोग' शीर्षक कविता का भावार्थ लिखें।
(v) 'प्यारे नन्हें बेटे को' शीर्षक कविता का केन्द्रीय भाव स्पष्ट कीजिए।
(vi) 'अधिनायक' शीर्षक कविता का केन्द्रीय भाव लिखें।

6. निम्नलिखित अवतरणों में से किसी एक का संक्षेपण कीजिए : $1 \times 4 = 4$

(i) जितना इंसान का रकबा है, उतना ही भाषा का है। शब्द जब तक भाषा की इकाई है, तब तक उसकी हद है, जहाँ वह भाषा में अंतरित हुआ कोई हद नहीं। क्योंकि वह महासागर की बूँद के समान है। हद से अनहद तक का सफर ही शब्द से भाषा तक का सफर

सर्वाधिक A-ONE PRAKASHAN

है। जो हम जानते हैं, वह हद है। जो जानना चाहते हैं, वह अनहद है। व्यक्ति-व्यक्ति के बीच भाषा में फर्क है। यही फर्क अपनी-अपनी हद का है। लोक और वेद इसी से समतोल है। वेद में जितनी गहराई है लोक में भी समायी हुई है। लोक और वेद दोनों भाषा का नहीं, आदमी का दो छोर है। जिसकी गति दोनों में है।

(ii) बोलने का विवेक, बोलने की कला और वाक् पटुता व्यक्ति की शोभा है, उसका आकर्षण है। सुबुद्ध वक्ता अपार जनसमूह का मन मोह लेता है, मित्रों के बीच सम्मान और प्रेम का केन्द्र-बिन्दु बन जाता है। जो लोग अपनी बात को राई का पहाड़ बनाकर प्रस्तुत करते हैं, वे एक ओर जहाँ सुनने वाले के धैर्य की परीक्षा लिया करते हैं, वहीं अपने और दूसरे का समय भी अकारण नष्ट किया करते हैं। वाणी का अनुशासन, वाणी का संयम और संतुलन तथा वाणी की मिठास ऐसी शक्ति है, जो हर कठिन स्थिति में हमारे अनुकूल ही रहती है। मरने के पश्चात् भी लोगों की स्मृतियों में हमें वह अमर बनाए रहती है। कम बोलो, सार्थक और हितकर बोलो। यही वाणी का तप है।

उत्तर

खण्ड–अ (वस्तुनिष्ठ प्रश्न)

1. (A)	2. (B)	3. (B)	4. (B)	5. (A)	6. (D)
7. (A)	8. (A)	9. (A)	10. (A)	11. (C)	12. (D)
13. (B)	14. (A)	15. (A)	16. (B)	17. (A)	18. (B)
19. (A)	20. (A)	21. (A)	22. (B)	23. (B)	24. (D)
25. (C)	26. (A)	27. (D)	28. (A)	29. (A)	30. (A)
31. (A)	32. (A)	33. (A)	34. (A)	35. (B)	36. (A)
37. (A)	38. (A)	39. (A)	40. (A)	41. (B)	42. (A)
43. (A)	44. (A)	45. (A)	46. (A)	47. (B)	48. (A)
49. (A)	50. (A)	51. (A)	52. (C)	53. (C)	54. (A)
55. (B)	56. (B)	57. (B)	58. (A)	59. (A)	60. (B)
61. (B)	62. (D)	63. (B)	64. (B)	65. (C)	66. (B)
67. (B)	68. (A)	69. (A)	70. (B)	71. (B)	72. (A)
73. (A)	74. (A)	75. (A)	76. (A)	77. (B)	78. (C)
79. (C)	80. (C)	81. (B)	82. (C)	83. (A)	84. (C)
85. (C)	86. (A)	87. (B)	88. (D)	89. (D)	90. (A)
91. (B)	92. (A)	93. (A)	94. (B)	95. (A)	96. (A)
97. (B)	98. (A)	99. (C)	100. (A)		

खण्ड–ब (विषयनिष्ठ प्रश्न)

1. (i) प्रिय कवयित्री : सुभद्रा कुमारी चौहान

सुभद्रा कुमारी चौहान मुख्यत: कवयित्री थीं। उनकी कविताओं में दो प्रवृत्तियों विशेष रूप से महत्त्व की हैं–पहली तो राष्ट्रीय भावना की और दूसरी घरेलू जीवन की। आपकी राष्ट्रीय कविताओं में समसामयिक देश-प्रेम और भारतीय इतिहास एवं संस्कृति की गहरी छाप है। सुभद्रा जी ने अपनी राष्ट्रीय रचनाओं में जिस प्रतिभा के साथ सांस्कृतिक और राष्ट्रीय भावनाओं को समसामयिक राजनीतिक जीवन के तात्कालिक सन्दर्भ से जोड़ा था, उससे उनकी प्रतिभा का विशेष परिचय मिलता है।

सुभद्रा कुमारी चौहान का जन्म सन् 16 अगस्त, 1904 ई० को प्रयाग के निहालपुर मुहल्ले में हुआ था। उनका विद्यार्थी जीवन प्रयाग में ही बीता। कास्थवेट गर्ल्स कॉलेज से आपने शिक्षा प्राप्त करने के बाद नवलपुर के सुप्रसिद्ध वकील डॉ० लक्ष्मण सिंह के साथ आपका विवाह हो गया। आपकी रुचि साहित्य में बाल्यकाल से ही था। प्रथम काव्य रचना आपने 15 वर्ष की आयु में ही लिखीं थीं। राष्ट्रीय आन्दोलन में बराबर सक्रिय भाग लेती रहीं। कई बार जेल गयी। काफी दिनों तक मध्यप्रांत असेम्बली की कांग्रेस सदस्या रहीं और साहित्य एवं राजनीतिक जीवन में समान रूप से भाग लेकर अन्त तक देश की एक जागरूक नारी के रूप में अपना कर्त्तव्य निभाती रहीं। 1948 ई० में अप्रैल में आपका स्वर्गवास हो गया।

सुभद्रा कुमारी चौहान के काव्यों की मुख्य विशेषण उनकी काव्यशैली है। किसी भी जटिल से जटिल भाव को सम्पूर्ण सरलता के साथ रखती थीं। भाव और अभिव्यक्ति, दोनों को एक-दूसरे में ऐसा पिरोकर रखती थीं कि कहीं भी उनकी शैली में राष्ट्रीय भावना आरोप के समान नहीं लगती। बुन्देलखण्ड में लोक-शैली में गाये जाने वाले छन्द को लेकर उसी में 'झाँसी की रानी' जैसी रोमांचक कथा लिखना उनकी प्रतिभा और दृष्टि दोनों का परिचय देता है।

राष्ट्रीय आन्दोलन के दिनों में यद्यपि 'झाँसी की रानी' काव्य को अंग्रेजी सरकार ने जब्त कर लिया था फिर भी हिन्दी भाषी जनता को कण्ठाग्र हो गया था। 'शैशव के सुन्दर प्रभात का मैंने नव विकास देखा, यौवन की मादक लाली में यौवन का हुलास देखा' आदि कविताओं से हमें यह स्पष्ट पता चलता है कि सुभद्रा जी में गम्भीर से गम्भीर विषय को भी सरल रूप में प्रस्तुत करने की अद्भुत क्षमता थी। लेकिन इस सरलता में सुभद्राजी की रचनाएँ अपनी सरसता नहीं खोतीं। भावव्यंजक सरलता और हृदयस्पर्शी सरसता दोनों के योग से वह अपनी रचनाओं को बड़ी मधुर बना देती थीं। उनकी कविताओं का संकलन 'त्रिधारा' और 'मुकुल' शीर्षक से प्रकाशित हुआ है।

काव्य के अतिरिक्त सुभद्रा जी ने कहानियाँ भी लिखीं है। कहानियों में भी वही सरल शैली और जीवन के मधुरतम भावुक क्षणों का मानवीय चित्रण है। इनके कहानी संग्रह हैं–बिखरे मोती और उन्मादिनी।

सुभद्रा जी की भाषा बोलचाल की भाषा है और शिल्प भी अत्यन्त सहज और सुलभ पक्षों का समर्थन करता हुआ चलता है। नारी हृदय की कोमलता और उसके मार्मिक भाव-पक्षों को नितान्त स्वाभाविक रूप से प्रस्तुत करना सुभद्रा जी की शैली का आधार है। प्रस्तुत कविता सुभद्रा जी के प्रतिनिधि काव्य संकलन 'मुकुल' से ली गई है जो निराला की 'सरोज स्मृति' के बाद हिन्दी में एक दूसरा शोक गीत है जो पुत्र के असामयिक निधन के बाद कवयित्री माँ द्वारा लिखी गई।

(ii) मेरे प्रिय नेता : महात्मा गाँधी

महात्मा गाँधी का जन्म 2 अक्टूबर, 1869 को गुजरात में पोरबन्दर (काठियावाड़) की धरती पर हुआ था। इनके पिता करमचन्द गाँधी वहाँ के दीवान थे। इनकी माता पुतली बाई एक धर्मनिष्ठ महिला थीं। गाँधीजी एक साधारण विद्यार्थी थे, पर शुरू से ही सत्य के प्रति उनकी अटूट निष्ठा थी। पिता की मृत्यु के बाद वे बैरिस्टरी पढ़ने इंगलैंड गये। बैरिस्टर बन कर इंगलैंड से लौटने के बाद एक मुकदमें के सिलसिले में उन्हें दक्षिण अफ्रीका जाना पड़ा। वहाँ भारतीयों की दुर्दशा देखकर उन्हें बड़ी वेदना हुई। उन्हें मानवोचित अधिकार दिलाने के लिए उन्होंने वहाँ अहिंसक आंदोलन छेड़ा, जिसके आगे वहाँ के गोरे शासकों को झुकना पड़ा।

दक्षिण अफ्रीका से लौटने के बाद स्वदेशवासियों की दशा सुधारने एवं अंग्रेजों से शोषण को शान्त करने में वे लग गये। यहाँ उनके सत्याग्रह आन्दोलन का प्रथम कार्यक्षेत्र बना चम्पारण, जहाँ नीलहे गोरों का अत्याचार अपनी पराकाष्ठा पर था और इसके बाद तो देश का हर गाँव, हर नगर उनका कार्य-क्षेत्र बन गया। सत्य और अहिंसा उनके अस्त्र थे। काँग्रेस का नेतृत्व उनके हाथों में आ गया। आजादी के लिए उन्होंने सत्याग्रह और सविनय अवज्ञा आंदोलन शुरू किया और उनके आगे अंग्रेज टिक न सके। 15 अगस्त, 1947 को हमारा देश स्वतंत्र हुआ। स्वतंत्रता के बाद वे देश-विभाजन के विरुद्ध थे। हिन्दू-मुसलमानों के बीच जो संघर्ष हुआ उससे उन्हें मर्मान्तक कष्ट हुआ, पर परिस्थितियों ने उन्हें लाचार बना दिया।

दु:ख है कि जो महामानव सत्य एवं अहिंसा का अद्भुतव्रती ही आजीवन विश्व-शान्ति के लिए प्रयास करता रहा, हिन्दू-मुस्लिम एकता जिसके जीने का परम आदर्श व्रत था, उसे ही 30 जनवरी, 1948 को नाथूराम गोडसे ने अपनी गोलियों का शिकार बना दिया। मानवता रो पड़ी, सारा संसार इस दु:खद घटना से कराह उठा। महात्मा गाँधी जीवन पर आध्यात्मिक मूल्यों के आराधक तथा व्याख्याता रहे। सारे राष्ट्र ने उन्हें राष्ट्रपति कहकर सम्मान दिया और वे 'बापू' कहलाये। उनका जीवन सही अर्थों में महात्मा का जीवन था। वे सचमुच महामानव और शान्ति के दूत थे। ऐसे पुरुष युगों के बाद कभी इस धरती पर अवतरित होते हैं। आज गाँधीजी हमारे बीच नहीं हैं, फिर भी प्रत्येक व्यक्ति के हृदय में बसे हुए

हैं, इसमें सन्देह नहीं। अत: महात्मा गाँधी की देश सेवा तथा देशभक्ति से हमें प्रेरणा लेनी चाहिए।

(iii) पुस्तकालय

पुस्तकालय प्रज्ञा की पावन प्रभाव है। 'पुस्तकालय' का अर्थ होता है 'पुस्तकों का घर' यानी वह स्थल जहाँ बहुत सारी पुस्तकें हों और जिन्हें कुछ नियमित पढ़नेवाले हों। आजकल ऐसे पुस्तकालय अच्छे शहरों के हर मुहल्ले में मिलते हैं, कस्बों और बड़े गाँवों में भी अवश्य होते हैं। अब तो इनका विस्तार गाँव-गाँव में किया जा रहा है। पुस्तकालय प्राय: सार्वजनिक भी होते हैं; वैसे, बहुत-से प्रबुद्ध नागरिक निजी पुस्तकालय भी रखते हैं। इधर सरकार द्वारा चल पुस्तकालयों की भी व्यवस्था की गई है। लोगों की अध्ययन में रुचि एवं सामर्थ्य के अनुरूप किसी केन्द्रीय स्थल पर ऐसे भवन का चुनाव कर लिया जाता है, जिसमें कम-से-कम तीन या और अधिक कमरे हों। उनमें एक कमरा, जो प्राय: और कमरों से छोटा और किनारे पर आगे की ओर होता है, पुस्तकालय के कार्यालय का काम करता है। शेष कमरों में लोहे की या लकड़ी की, उनकी क्षमता के मुताबिक, आलमारियाँ सजी होती हैं। इनमें पुस्तके अक्षरानुक्रम से सजाई जाती है। कई बार इनका विषयवार वर्गीकरण भी कर दिया जाता है कुछ आलमारियों में खानों के सामने (आगे की ओर) शीशे लगे रहते हैं जिनसे अन्दर रखी किताबें साफ दिखती है।

पुस्तकालय के कार्यालय में उसकी देखरेख के लिए निर्धारित या नियुक्त पदाधिकारी बैठा करते हैं। एक दो कर्मचारी ऐसे भी होते हैं जो पुस्तकें निकालकर दिया करते हैं या पुस्तकालय के बाहर जाने या पुन: लौटाई जाने वाली पुस्तकों को रजिस्टर में दर्ज किया करते हैं। अच्छे पुस्तकालयों में एक सार्वजनिक अध्ययनकक्ष होता है, जहाँ बीच में ऊँचे चौड़े टेबुल सजे होते हैं और उनके दोनों ओर बैठकर पढ़ने के लिए कुर्सियाँ या बेंच। बीच के टेबुलों पर प्राय: पत्र-पत्रिकाएँ रखी होती है। ये पत्र-पत्रिकाएँ विभिन्न प्रकार की-दैनिक, साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक, त्रैमासिक बगैरह-होती है। ये विभिन्न स्थलों से प्रकाशित होती है और पुस्तकालय सचिव द्वारा चन्दे भेजकर वहाँ से मँगवाई जाती है। अच्छे पुस्कालयों में मनोरंजन के कुछ सामान जुटाए जाते हैं, यद्यपि उनके चयन में सावधानी बरतने की आवश्यकता होती है। ग्रामीण पुस्तकालयों में, जहाँ अधिकांश सदस्य गरीब होते हैं; वहाँ रखे जाने वाले रेडियो का बड़ा महत्व होता है। सदस्य उससे अपने राज्य, देश एवं पूरे विश्व की खबरें सुनते हैं; उससे होनेवाले साहित्यिक महत्व के प्रसारणों का आनन्द लेते हैं और अपना मनोरंजन भी करते हैं।

पुस्तकालय वस्तुत: ज्ञान के घर हैं। वहाँ सदस्य ज्ञानार्जन के लिए जाते हैं। इसी उद्देश्य से वहाँ पुस्तकें निर्गत करते और घर ले जाकर पढ़ा करते हैं। पर यह उद्देश्य भलीभाँती तभी पुरा हो सकता है, जब पुस्तकालय के पदाधिकारी पढ़े-लिखे एवं शालीन रुचि से सम्पन्न हों; वे विभिन्न विषयों की अच्छी पुस्तकों का चुनाव करें और हलकी, भोंडी, अश्लील पुस्तकों से अपने पुस्तकालय को बचाए रखें। कारण, क्या शहर और क्या गाँव, ऐसे पुस्तकालय सर्वत्र भरे पड़े हैं; जहाँ पुस्तकों के नाम पर अश्लील और जासूसी कथा-पुस्तकों का अंबार लगा रहता है, अन्य सुपाठ्य सामग्री कुछ भी नहीं होती। पुस्तकालयों को जहाँ राष्ट्र के सांस्कृतिक गौरव से पस्चिय प्राप्त करने का केन्द्र बनाया जाना चाहिए वहाँ उनके माध्यम से ही राष्ट्रीय भावना का प्रचार-प्रसार भी होते रहना चाहिए। ऐसा होने में ही पुस्तकालयों की महती सार्थकता है।

(iv) स्वास्थ्य और योग

स्वास्थ्य सबसे बड़ा धन है। यह हमें जीवन में सभी छोटी चीजों का आनंद लेने में मदद करता है। अगर कोई स्वस्थ नहीं है, तो वे खुश महसूस करने में असफल होते हैं। दुखी होना हमारे आस-पास के लोगों के स्वास्थ्य को भी प्रभावित कर सकता है। सही मायने में स्वस्थ रहने के लिए व्यक्ति को अच्छा खाना चाहिए, समय पर सोना चाहिए और जल्दी उठना चाहिए। रोजाना व्यायाम करके फिट रहने से भी व्यक्ति के स्वास्थ्य को ठीक रखने में मदद मिलती है। यदि आप अच्छे स्वास्थ्य में हैं, तो आप हमेशा अधिक धन प्राप्त करने के लिए काम कर सकते हैं। लेकिन अगर कोई स्वस्थ नहीं है, तो धन का कोई महत्त्व नहीं है।

योग का अभ्यास पहले के दिनों में हिंदु, बौद्ध और जैन धर्म के अनुयायियों द्वारा किया जाता था। धीरे-धीरे इसने पूरी दुनिया में अपना रास्ता बना लिया और दुनिया भर के लोग अच्छे स्वास्थ्य के लिए, अपने दिमाग को आराम देने और उन्हें शारीरिक रूप से फिट रखने के लिए योग करते हैं।

योग एक प्राचीन तपस्वी अनुशासन है जो मन और शरीर को जोड़ता है। यह एक ऐसा व्यायाम है जिसमें हमारे शरीर के तत्वों को संतुलित करके साँस पर नियंत्रण, सरल ध्यान और विशिष्ट शारीरिक मुद्राओं को अपनाना शामिल है। अच्छे स्वास्थ्य, शारीरिक और मानसिक विश्राम के लिए योग का व्यापक रूप से अभ्यास किया जाता है।

इसके अलावा, योग हमें अपने शरीर के साथ-साथ दिमाग पर भी नियंत्रण रखने में मदद करता है। तनाव और चिंता को दूर करने के लिए योग एक बेहतरीन तकनीक है।

(v) पर्यावरण

मनुष्य को यह शक्ति प्रदान की गयी है कि वह कुछ नयी चीजों का आविष्कार कर सके, ताकि उसके सुख-संसाधन बढ़ सके। लेकिन अब तक यह देखा गया है कि वह आविष्कार आविष्कार नहीं बन पाया है, वह ध्वंस और विनाश का उपकरण मात्र बनकर रह गया है। जंगली जानवरों को मनुष्यों ने मारा और पर्यावरण को बुरी तरह प्रदूषित किया। धरती को मनुष्यों ने दरिद्र बनाया और प्रतिदिन उसे कुरूप किया। बीसवीं शताब्दी में मनुष्य ने धरती को बहुत नुकसान पहुँचाया, उतना जितना इसके पहले की शताब्दियों में भी उसने नहीं पहुँचाया था। संसार में अब क्या बचेगा ? केवल कंकरीट, पत्थर के मकान और सड़कों पर दौड़ती गाड़ियों के टायर। मनुष्य तो दु:खी ही रहेगा–'सब्बं दुखं'।

पर्यावरण का अर्थ है धरती के ऊपर घेरनेवाला वातावरण-परिवेश। हवा प्रदूषित, पानी प्रदूषित और ध्वनि प्रदूषण ने धरती को हिला कर रख दिया है। हमें पर्यावरण की चेतना का संचार करना होगा। "पर्यावरण चेतना का अर्थ है कि लोग यह समझें कि कुदरत या प्रकृति के साथ संगति रखने में ही सुख है, विसंगति तो वेदना और विभीषिका को जन्म देती है। वन होंगे, तो वर्षा होगी, भूमि का कटाव रुकेगा, रेगिस्तान के पाँव बँधे जायेंगे, धरती की उर्वरा शक्ति बढ़ेगी और हमें अरबों-खरबों रुपयों की नैसर्गिक सम्पदा मिलती रहेगी।

चार दशक पूर्व पृथ्वी के उष्ण कटिबंधीय वर्षा से वनों का $\frac{1}{3}$ भाग नष्ट हो चुका था। वनों का यह विनाश धड़ल्ले से होता जा रहा है।

दशक पूर्व के आँकड़ा के अनुसार प्रतिवर्ष एक लाख सत्तर हजार वर्ग किलोमीटर वन क्षेत्र समाप्त हो रहे हैं; सात लाख हेक्टेयर भूमि रेगिस्तान में बदल रही है और पानी ? पानी की दुर्दशा तो यह है कि करोड़ों गैलन दूषित जल नदियों-झीलों के अस्तित्व का क्षरण, हवा में घुलता प्रदूषण का जहर, आण्विक रिएक्टरों की दुर्घटनाएँ और प्राकृतिक खनिजों और संसाधनों के बेरहम दोहन एवं शोषण आखिर हमें कहाँ ले जाएँगें ? ये धुआँ उगलती फैक्टरियाँ, जहरीले रसायनों का पौधों पर छिड़काव, ओजोन परत की क्षति और रेडियो एक्टिव धूलकण–ये सृष्टि को कहाँतक सुरक्षित रहने देंगे ?"

पर्यावरण की सुरक्षा के लिए पूरी दुनिया के लोगों को पहले एकमत होना होगा। सभी को यह चाहना होगा कि पर्यावरण प्रदूषित न हो। पर्यावरण शुद्ध करने के लिए कुछ उपायों पर उन्हें अमल करना होगा। पहले जंगलों के काटे जाने पर पूरी रोक लगानी होगी। पेड़ हवा को शुद्ध करते हैं। पेड़ बाढ़ आने से रोकते हैं। पेड़ वर्षा कराते हैं। पेड़ अनावृष्टि जैसी विपदा से धरती और धरती के लोगों को बचाते हैं। पेड़ वर्षा के चक्र को नियमित एवं संयमित करते हैं। पेड़ मरुभूमि के विस्तार को रोकते हैं। पेड़ ऑक्सीजन छोड़ते और कार्बन डाइऑक्साइड लेते हैं। पेड़ धरती को ठंडा रखते हैं। पेड़ धरती को गर्मी को कम एवं नियंत्रित करते हैं।

दूसरे, ऊर्जा की खपत हमें कम करनी होगी। प्राकृतिक स्रोतों से प्राप्त ऊर्जा का हमें इस्तेमाल करना होगा। सूर्य से प्राप्त ऊर्जा का हमें इस्तेमाल करना होगा। पवन से प्राप्त ऊर्जा का हमें इस्तेमाल करना होगा। बिजली की खपत हमें कम करनी होगी।

तृतीयत: हमें मोबाइल का इस्तेमाल कम करना होगा। चतुर्थत: फ्रीज, एयर कंडीशनर का इस्तेमाल हमें कम करना होगा। इससे ऑक्सीजन एवं ओजोन का क्षरण रुकेगा।

वन्य प्राणियों के जीवन पर पर्यावरण प्रदूषण का असर पड़ा। पेड़ एवं जंगल कट जाने से जंगली जानवर–बाघ, चीता, सिंह इत्यादि शहरों की ओर भागते हैं जहाँ उनका शिकार हो जाता है। प्रत्येक राष्ट्र को पर्यावरण, वनों एवं वन्य प्राणियों की रक्षा करने की पूरी कोशिश करनी होगी। वस्तुत: यदि वन न हों तो जीव जंतुओं की कल्पना ही नहीं की जा सकती। वन्य प्राणियों के रक्षण के लिए वन की उपयोगिता बनी रहेगी।

(vi) छात्र और अनुशासन

किसी भी देश का स्वर्णिम भविष्य वहाँ के विद्यार्थियों पर ही निर्भर करता है। जिस देश के विद्यार्थी गुमराह हो जायँ, उसे भगवान भी नहीं बचा सकता। कारण स्पष्ट है जो आज विद्यार्थी हैं वे ही कल सयाने होकर घर-परिवार का भार संभालते हैं, देश का नेतृत्व ग्रहण करते हैं।

देश-विदेश का इतिहास सामने है। तुर्की का नव-निर्माण किया मुस्तफा कमाल ने। आधुनिक रूस को जन्म दिया लेनिन ने। चीन को साम्राज्यवादी चंगुल से छुड़ा उसे स्वतंत्रता-पथ पर आगे बढ़ाया माओ-त्से-तुंग ने। ये सभी विद्यार्थी जीवन में ही अनुशासित थे। इसीलिए अपने देशवासियों में ये अनुशासन की भावना भर सके। महात्मा गाँधी हमारे 'बापू' थे। हम उन्हें 'राष्ट्रपिता' भी कहते हैं। उनके एक इशारे पर राष्ट्र पर मर-मिटने को तैयार हो जाते थे। उन्होंने हमारे स्वतंत्रता-आन्दोलन का नेतृत्व किया। पर, कभी भी अनुशासन की रास ढीली न होने दी। अपने विद्यार्थी-जीवन में ही उन्होंने अनुशासन की जो डगर पकड़ी, उसी पर वे स्वतंत्रता-सेनानियों को भी ले गये। और, अनुशासन की शक्ति उनकी एक बड़ी शक्ति बन गयी। देश में छोटे-बड़े नेता तो अनेक होते हैं, पर जो अनुशासन का महत्व प्रारंभ से समझते आये हैं और जिनमें दूसरों को अनुशासन की कड़ी में बाँध ने की क्षमता रहती है वे ही देश के लिए कुछ कर पाते हैं।

अनुशासन का अर्थ और कुछ बन्धनों को स्वीकार कर उनके द्वारा शासित होना। ये बंधन समाज या सरकार के भी हो सकते हैं। विद्यालय के कुछ खास नियम हैं। ये नियम विद्यार्थियों के लाभ के दृष्टि से नही बनाये गये हैं। जो विद्यार्थी इन नियमों का पालन नहीं करता, वह अपनी बर्बादी का कारण स्वयं बनता है। जो समय पर विद्यालय नहीं जायेगा। शिक्षक जो कुछ पढ़ाता है उसे वह ध्यान से नहीं सुनेगा; शिक्षकों द्वारा दिये गये 'टास्क' को जो पूरा करके नहीं लायेगा, वह किसी दूसरे की नहीं, स्वयं अपना अहित करेगा। भले ही विद्यार्थी परीक्षा में गलत उपायों का अवलम्बन कर 'पास' कर जाय, पर उसकी यह चरित्रहीन आगे उसके लिए बहुत खतरनाक बन जाती है। जो गुरुजनों का आदर नहीं करता, 'डिग्री' भले ही वह किसी तरह हासिल कर ले, पर विद्या की शक्ति उसके पास भी कभी नहीं आ पाती।

एक नियम बनाया गया है कि सड़क पर हम बाईं ओर चलें। इससे हम दुर्घटना से बचते हैं। इसी तरह विद्यालय के एवं समाज के कुछ नियम हैं; सरकार के कुछ नियम हैं। जो विद्यार्थी विद्यालय के नियमों का पालन नहीं करते, वे सही अर्थ में विद्या नहीं ग्रहण कर पाते। जो सामाजिक नियमों का पालन नहीं करते, अर्थात् जो अपने से बड़ों को उचित सम्मान एवं छोटे को स्नेह नहीं देते, जो दूसरों की माँ-बहनों को अपनी माँ-बहनों की तरह नहीं देखते उनमें चारित्रिक उच्छृंखलता आ जाती है।

सबसे ऊपर है विवेक का बन्धन। जो विवेक के बंधन को स्वीकार करेगा वह कभी गलत काम करेगा ही नहीं। विवेक ही विद्या की शक्ति है। अत: विद्यार्थी यदि अपने जीवन को अपने परिवार एवं देश का उन्नत बनाना चाहता है तो उन्हें प्रारंभ से ही अपने-आप में विवेक-बुद्धि जाग्रत करनी होगी।

अनुशासन का चरित्र-निर्माण में बहुत बड़ा हाथ है और सही अर्थ में शिक्षित वही है जो चरित्रनिष्ठ है जिसे भले-बुरे का ज्ञान है, भले ही उसने किताबें न पढ़ी हों। अत: विद्यार्थी याद रखे, अनुशासन को खोकर वे चरित्र को खो देंगे। फिर तो जानवर की तरह अपना पेट भले ही भर लें, जीवन में 'कुछ' न कर सकेंगे।

2. (i) प्रस्तुत पंक्तियाँ मोहन राकेश की एकांकी 'सिपाही की माँ' से ली गई हैं। इस कथन के द्वारा दहेज प्रथा अथवा महँगाई पर चोट की गई है। कुंती से वार्तालाप करते हुए विशनी कहता है कि मुन्नी के लिए वर-घर देख आखिर मैं क्या कर सकता हूँ। मेरे हाथ में पैसा है नहीं। इसलिए मानक का इंतजार करना होगा। इधर महँगाई भी बढ़ गयी है। ये लोग दहेज में कुछ लेंगे भी या नहीं। यह कथन निम्न मध्यवर्गीय परिवार की आर्थिक दशा वयाँ करता है। उसके सारे सपने एक व्यक्ति पर टिके हुए हैं।

(ii) प्रस्तुत पंक्तियाँ रामधारी सिंह 'दिनकर' के निबंध अर्द्धनारीश्वर से ली गयी हैं। प्रस्तुत पंक्तियों में कवि यह कहना चाहता है कि जिस तरह वृक्ष के अधीन उसकी लताएँ फलती-फूलती हैं उसी तरह पत्नी भी पुरुषों के अधीन है। वह पुरुष के पराधीन है। इस कारण नारी का अस्तित्व ही संकट में पड़ गया। उसके सुख और दुख, प्रतिष्ठा और अप्रतिष्ठा यहाँ तक कि जीवन और मरण भी पुरुष की मर्जी पर हो गये। उसका सारा मूल्य इस बात पर जा ठहरा कि पुरुषों की इच्छा पर वह है। वृक्ष की लताएँ वृक्ष के चाहने पर ही अपना पर फैलती हैं। उसी प्रकार स्त्री ने भी अपने को आर्थिक पंगु मानकर पुरुष की अधीनता स्वीकार कर ली और यह कहने को विवश हो गयी कि पुरुष के अस्तित्व के कारण ही मेरा अस्तित्व है। इस परवशता के कारण उसी सहज दृष्टि भी छिन गयी जिससे यह समझती कि वह नारी है। उसका अस्तित्व है। एक सोची-समझी साजिश के तहत पुरुषों द्वारा वह पंगु बना दी गई। इसीलिए वह सोचती है कि मेरा पति मेरा कर्णधार है, मेरी नैया वही पर करा सकता है, मेरा अस्तित्व उसके होने के कारण को लेकर है। वृक्ष लता को अपनी जड़ों से सींचकर उसे बढ़ने का मौका देता है और कभी दमन भी करता है। इसी तरह एक पत्नी भी इसी दृष्टि से अपने पति को देखती है।

(iii) प्रस्तुत पंक्तियाँ मलयज लिखित 'हँसते हुए मेरा अकेलापन' शीर्षक डायरी से ली गयी हैं। प्रस्तुत पंक्तियों में लेखक ने इस संसार से जुड़ाव के कार्य को एक रचनात्मक कर्म माना है। इस कर्म के बिना मानवीयता अधूरी है।

मनुष्य इस संसार में वंश-परम्परा को कायम रखता है। उनकी संतानें उनकी रचना हैं। उनका परिवार उनका बंधन है। परिवार का पालन-पोषण करना मनुष्य को यथार्थ बोध कराता है। इसे लेखक सांसारिक जुड़ाव की संज्ञा भी देते हैं। यथार्थ का लेन-देन का नाम ही संसार है। बालक अपने पिता पर निर्भर रहता है जब वही बालक बड़ा बनकर पिता बनता है तो वह उसका पालन-पोषण करता है। इस सांसारिक लेन-देन को लेखक रचनात्मक कार्य मानते हैं। इतना ही नहीं इसके बिना ये जीवन को अधूरा मानते हैं। वे कर्म के बिना मानवता को भी अधूरा मानते हैं।

इस प्रकार सांसारिक जुड़ाव एक रचनात्मक कार्य है। इसके बिना मानव जीवन अपूर्ण है।

(iv) प्रस्तुत पंक्तियाँ सुभद्रा कुमारी चौहान की कविता 'शोक गीत पुत्र वियोग' से ली गई हैं। इन पंक्तियों में कवयित्री की असीम पुत्र प्रेम की व्यंजना हुई है। कवयित्री का पुत्र असमय उसे बिछुड़ जाता है। उसी बिछुड़े हुए पुत्र का वियोग की व्यंजना इन पंक्तियों के माध्यम से हुई है। कवयित्री का पुत्र प्रेम इतना प्रगाढ़ है कि वह पुत्र की प्राप्ति के लिए मिन्नतें तो माँगती हैं पर वह माँगा हुआ पुत्र असमय मृत्यु को प्राप्त होता है। कवयित्री का हृदय इस दु:ख को सहन नहीं कर पाता है। वह कहती है–आज पूरे विश्व में उल्लास, खुशी एवं हर्ष का वातावरण है, आज सारी दिशाएँ चतुर्दिक खुशियाँ ही खुशियाँ दिखाई पड़ रही हैं परन्तु मैं इस दुनिया में अकेली दुखी हूँ। मेरा पुत्र जिसके कारण मैं उसी में खोयी रहती थी जिस प्रकार कोई बच्चा खिलौने में खोया रहता है। आज वह खिलौना मेरा खो गया है। जिस प्रकार बच्चों के खिलौने खेलने के क्रम में इर्द-गिर्द कहीं खो जाते हैं फिर मिल भी जाते हैं उसी प्रकार मेरा खिलौना खो गया। परन्तु वापस फिर नहीं मिला। एक माँ का पुत्र वियोग कितना दारुण हो सकता है वह सुभद्रा जी की इन पंक्तियों से पता चलता है। सुभद्रा जी की काव्य भाषा एकदम बोलचाल के नजदीक है एवं शब्द इतने सरल कि समझने में कोई दिक्कत नहीं आये। परन्तु भाव बड़े गूढ़ हैं। इन पंक्तियों से एक माँ के हृदय की करुणा पुकार सुनाई पड़ती है जो प्रत्येक व्यक्ति के मर्म पर आघात करती है।

3. सेवा में,

बैंक मैनेजर महोदय
स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया
भिखना पहाड़ी, पटना-4

विषय–नया खाता खुलवाने के सम्बन्ध में।

महाशय,

सविनय निवेदन यह है कि मैं आपके शाखा में नया खाता खुलवाना चाहता हूँ, क्योंकि आपके बैंक शाखा से मेरा घर नजदीक पड़ता है।

अतः श्रीमान् से निवेदन है कि खाता खोलने का आदेश निर्गत करें।

आपका विश्वासभाजन
कौशल सिंह
भिखना पहाड़ी, पटना-4

अथवा

आदर्श छात्रावास
+2 उच्च मध्य विद्यालय, पटना
दिनांक : .....

परमपूज्य माताजी,

सादरचरण स्पर्श।

आपका कृपापत्र कल ही प्राप्त हुआ। आप श्रेष्ठ जनों के शुभाशीष से मैं यहाँ सकुशल हूँ और पूरे मनोयोग से अपनी परीक्षा की तैयारी में जुटा हूँ। आपलोग मेरी चिन्ता नहीं करेंगे।

मेरी आगामी परीक्षा अब सन्निकट है। मैं उसके लिए पूरी निष्ठा और क्षमता के साथ तैयारी में लगा हूँ। सभी विषयों की तैयारी प्रायः पूरी हो चुकी है। हाँ, अंग्रेजी में पहले कुछ कठिनाई अवश्य हुई खासकर ग्रामर में, किन्तु अंग्रेजी शिक्षक महोदय की कृपा से अब इस विषय में कोई कठिनाई नहीं है। यहाँ गुरुजनों का मार्गदर्शन हमेशा मिलता रहता है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त होंगे।

पूज्यनीय पिताजी को मेरी ओर से सादर चरण स्पर्श।

पता :

आपका प्रिय पुत्र
पुष्पेन्द्र कुमार

4. (i) उषा का जादू उषाकालीन नभ की प्राकृतिक सुंदरता है जिसके लिए कवि ने बहुविध उपमान जैसे नीले शंख, राख से लीपे हुए गीले चौक, काली सिल जो लाल केसर में धुली हो, लाल खड़िया से लिखी स्लेट के समान आदि प्रस्तुत किया है। सूर्योदय के पूर्व तक ही आकाश की गोद में उषा का जादू चलता रहता है। उषा का जादू नीले शंख के समान, राख से लीपे हुए नीले चौक आदि के समान है।

(ii) हिन्दी कविता का इतिहास मुख्यतः प्रगीत मुक्तकों का है। इतना ही नहीं बल्कि गीतों ने ही जनमानस को बदलने में क्रान्तिकारी भूमिका अदा की है। ''रामचरितमानस'' की महिमा एक निर्विवाद सत्य है, इस सत्य से किसी को इन्कार नहीं, लेकिन 'विनय-पत्रिका' के पद एक व्यक्ति का अरण्यरोदन मात्र नहीं है। मानस के मर्मी भी यह मानते हैं कि तुलसी के विनय के पदों में पूरे युग की वेदना व्यक्त हुई है और उनकी चरम वैयक्तिकता ही परम सामाजिकता है। तुलसी के अलावा कबीर, सूर, मीरा, नानक, रैदास आदि अधिकांश संतों ने प्रायः दोहे और गेय पद ही लिखे हैं। यदि विद्यापति को हिन्दी का पहला कवि माना जाय तो हिन्दी कविता का उदय ही गीत से हुआ जिसका विकास आगे चलकर संतों और भक्तों की वाणी में हुआ। गीतों के साथ हिन्दी कविता का उदय कोई सामान्य घटना नहीं, बल्कि एक नई प्रगीतात्मकता (लिरिसिज्म) के विस्फोट का ऐतिहासिक क्षण है जिसके धमाके से मध्ययुगीन भारतीय समाज की रूढ़ि-जर्जर दीवारें हिल उठीं, साथ ही जिसकी माधुरी सामान्य जन के लिए संजीवनी सिद्ध हुई। कहने की आवश्यकता नहीं कि लोकभाषा की परिष्कृत प्रतीकात्मकता का उन्मेष भारतीय साहित्य की अभूतपूर्व घटना है, जिसकी अभिव्यक्ति हिन्दी के साथ ही भारत की सभी आधुनिक भाषाओं में लगभग साथ-साथ हुई।

(iii) अन्तरात्मा की सोच को चौर कहा जाता है जबकि हृदय की सोच को मन कहा जाता है। अन्तरात्मा की आवाज से प्रभावित होकर मनुष्य सत्यवादी बनता है। मन की आवाज पर मनुष्य अपने जीवन की धारा को सही दिशा में ले जाता है।

(iv) कृष्ण नन्द बाबा की गोद में बैठे है और अपने हाथ से उठा-उठाकर खा रहे हैं। वे थोड़ा-सा खाते हैं, अधिक धरती पर गिरा देते हैं। वे भोज्य पदार्थों को अपने हाथ से ही उठाते हैं। अनेक पदार्थ उनके सामने हैं पर दही उनको सर्वाधिक प्रिय है। वे जब मिश्री, दही, माखन मिलाकर अपने मुँह में डालते हैं तो उस समय की शोभा देखते ही बनती है।

(v) 'बातचीत' निबंध लब्धप्रतिष्ठित गद्यकार, महान निबंधकार तथा हिन्दी आलोचना के प्रवर्तकों के शिखर पुरुष बालकृष्ण भट्ट द्वारा रचित है। इस ललित निबंध में निबंधकार ने ध्यान या मनोयोग या चित्त को एकाग्रचित करने की कला को केन्द्र में रखा है। संसार की सारी समस्याओं के समाधान हेतु आत्ममंथन करने की सलाह दी है। निबंधकार ने एक तरफ जिह्वा को कातरनी की संज्ञा देकर उस पर रोक लगाने का भरसक प्रयास किया है तो दूसरी तरफ मौन रह अपने (स्वयं) से बातचीत करने को मूलमंत्र बताते हुए इस साधना करके शक्ति परम पूज्य मन्दिर तथा परमार्थ का एकमात्र सोपान माना है। आत्मा के दिग्दर्शन से प्रत्येक स्थिति एवं परिस्थिति की सजीव तस्वीर स्वयं ही मानव के मानस पटल पर अंकित हो जाती है। प्रस्तुत निबंध कल्पना को 'जनसमूह के चित्त के विकास का संवाहक' और जन संस्कृति के विकास प्रवाह का मूर्त वाङ्मय उपादान तथा गृह लोक संपृक्ति की उपज के रूप में प्रतिस्थापित करता है। निबन्ध में वाक्शक्ति की महत्ता तथा आर्ट ऑफ कनवरसेशन की आकर्षण शक्ति को प्रतिबिंबित किया गया (मौन, मूक) है। निबंधकार भट्ट ने स्पष्ट किया है कि आवाक् जीवन की आधारशिला के पत्थर हैं जिनपर शक्ति का परम पूज्य मन्दिर और परमार्थ का सोपान टिका है।

(vi) 'पंच परमेश्वर' का अर्थ है–'पंच' परमेश्वर का रूप होता है। वस्तुतः पंच के पद पर विराजमान व्यक्ति अपने दायित्व-निर्वाह के प्रति पूर्ण सचेष्ट एवं सतर्क रहता है। वह निष्पक्ष न्याय करता है। उस पर सम्बन्धित व्यक्तियों की पूर्ण आस्था रहती है तथा उसका निर्णय 'देव वाक्य' होता है।

कवि यह देखकर खिन्न है कि आधुनिक पंचायती राज व्यवस्था में पंच परमेश्वर की सार्थकता विलुप्त हो गई। एक प्रकार से अन्याय और अनैतिकता ने व्यवस्था को निष्क्रिय कर दिया है, पंगु बना दिया है। पंच परमेश्वर शब्द अपनी सार्थकता खो चुका है।

कवि उपरोक्त कारणों से ही चिन्तित है।

(vii) शिवाजी की तुलना भूषण ने इन्द्र, राम, परशुराम, चीता, सिंह (मृगराज) कृष्ण, आदि से की है।

(viii) तुलसी को भक्तिरूपी अमृत के समान सुन्दर भोजन की भूख है। अर्थात् हे प्रभु अपने चरणों में ऐसी भक्ति दे दीजिए कि फिर कोई दूसरी कामना न रह जाए।

(ix) सम्पूर्ण विश्व में जन-जन का युद्ध जन-मुक्ति के लिए चल रहा है। शोषक, खूनी चोर तथा अन्य अराजक तत्वों द्वारा सर्वत्र व्याप्त असन्तोष तथा आक्रोश की परिणति जन-जन के युद्ध अर्थात् जनता द्वारा छेड़े गए संघर्ष के रूप में हो रहा है।

(x) तुलसी ने अपने दूसरे पद में दीनता और दरिद्रता दोनों शब्दों का प्रयोग किया है। शब्दकोश के अनुसार दोनों शब्दों के अर्थ एक-दूसरे से सामान्य तौर पर मिलते-जुलते हैं, किंतु प्रयोग और कोशीय आधार २ दोनों में भिन्नता है।

(a) दीनता का शाब्दिक अर्थ है–निर्धनता, पराधीनता, हीनता, दयनीयता आदि।

(b) दरिद्रता का शाब्दिक अर्थ है–अपवित्रता, अरुचि, अशुद्धता, दरिद्रता और घोर गरीबी में जीनेवाला। निर्धनता के कारण समाज में व्यक्ति को प्रतिष्ठा नहीं मिलती है इससे भी उसे अपवित्र माना जाता है।

(c) दरिद्र दुर्भिक्ष और अकाल के लिए भी प्रयुक्त होता है।

संभव है तुलसीदासजी अपनी दीन-हीन दशा के कारण अपने को अशुद्ध/अशुचि के रूप में देखते हैं। एक का अर्थ गरीबी, बेकारी, बेबसी के लिए और दूसरे का प्रयोग अशुद्धि, अपवित्रता के लिए हुआ हो। तीसरी बात भी है–तुलसीदास जी जब इस कविता की रचना कर रहे थे तो उस समय भारत में भयंकर अकाल पड़ा था जिसके कारण पूरा देश घोर गरीबी, भूखमरी का शिकार हो गया था। हो सकता है कि अकाल के लिए भी प्रयोग किया हो। कवि अपने भावों के पुष्टीकरण के लिए शब्दों के प्रयोग में चतुराई तो दिखाते ही हैं।

5. (i) भगत सिंह देश सेवा के बदले दी गई फाँसी (मृत्युदंड) को सुंदर मृत्यु कहा है। भगत सिंह इस संदर्भ में कहते हैं कि जब देश के भाग्य का निर्णय हो रहा हो तो व्यक्तियों के भाग्य को पूर्णतया भुला देनी चाहिए। इसी दृढ़ इच्छा के साथ हमारी मुक्ति का प्रस्ताव सम्मिलित रूप में और विश्वव्यापी हो और उसके साथ ही जब यह आंदोलन अपनी चरम सीमा पर पहुँचे तो हमें फाँसी दे दी जाय। यह मृत्यु भगत सिंह के लिए सुंदर होगी जिसमें हमारे देश का कल्याण होगा। शोषक यहाँ से चले जायेंगे और हम अपना कार्य आप करेंगे। इसी के साथ व्यापक समाजवाद की कल्पना भी करते हैं जिसमें हमारी मृत्यु बेकार न जाय। अर्थात् संघर्ष में मरना एक आदर्श मृत्यु है। भगत सिंह आत्महत्या को कयरता कहते हैं क्योंकि कोई भी व्यक्ति जो आत्महत्या करेगा वह थोड़ा दुख, कष्ट सहने के चलते करेगा। वह अपना समस्त मूल्य एक ही क्षण में खो देगा। इस संदर्भ में उनका विचार है कि मेरे जैसे विश्वास और विचारों वाला व्यक्ति व्यर्थ में मरना कदापि सहन नहीं कर सकता। हम तो अपने जीवन का अधिक-से-अधिक मूल्य प्राप्त करना चाहते हैं। हम मानवता की अधिक-से-अधिक सेवा करना चाहते हैं। संघर्ष में मरना एक आदर्श मृत्यु है। प्रयत्नशील होना एवं श्रेष्ठ और उत्कृष्ट आदर्श के लिए जीवन दे देना कदापि आत्महत्या नहीं कही जा सकती। आत्महत्या को कायरता इसलिए कहते हैं कि केवल कुछ दुखों से बचने के लिए अपने जीवन को समाप्त कर देते हैं। इस संदर्भ में वे एक विचार भी देते हैं कि विपत्तियाँ व्यक्ति को पूर्ण बनाने वाली होती है।

(ii) 'उसने कहा था' शीर्षक किसी घटना विशेष की ओर संकेत करता है, एवं जिज्ञासा का सृजन करता है। जानने की उत्सुकता बनी रहती है।

एक सटीक तथा उपयुक्त शीर्षक के लिए उसकी कहानी की विषयवस्तु का सम्यक् एवं सजीव परिचय देना है। उसकी सार्थकता पाठक में उत्सुकता की सृष्टि करने पर भी निर्भर करती है। इस कहानी में वातावरण की सृष्टि करने में लेखक को अपूर्व सफलता प्राप्त हुई है। आरंम्भ से ही एक कौतूहल पाठक को अपने प्रभाव में बाँध लेता है और कहानी के उत्कर्ष बिन्दु पर पहुँचकर विराम लेता है। इसके अतिरिक्त कहानी का प्रभाव मन में गूँजता रहता है।

'उसने कहा था' कहानी की घटनाओं में स्वाभाविक नाटकीयता है जिसकी परिणति मानव-पटल पर विषाद एवं सहानुभूति की अमिट रेखा के रूप में होती है। इसका कथानक मानवीय संवेदना को झकझोर देता है।

(iii) एकांकी के दूसरे भाग में विशनी स्वप्न में जो घटना घटती है उसमें जो संवाद होता है उस संवाद से उसमें किसी भी सिपाही की माँ की ढूँढ़ा जा सकता हे। जब सिपाही मानक को खदेड़ते हुए विशनी के पास ले आता है तो मानक को गले से लिपटी जाता है और सिपाही के पूछने पर कि इसकी तू क्या लगती है विशनी का जवाब आता है–मैं इसकी माँ हूँ। मैं तूझे इसे मारने नहीं दूँगी। तब सिपाही का जवाब आता है यह हजारों का दुश्मन है वे उसको खोज रहे हैं नब विशनी कहती हैं–तू भी तो आदमी है, तेरा भी घर-बार होगा। तेरी भी माँ होगी। तू माँ के दिल को नहीं समझता। मैं अपने बच्चे को अच्छी तरह से जानती हूँ। साथ ही जब मानक का पलटकर सिपाही पर होता है तब विशनी मानक को यह कहती है कि बेटा ! तू इसे नहीं मारेगा। तुझे मेरी माँ की सौगन्ध इसे नहीं मारेगा इन संवादों से पता चलता है कि विशनी मानक को जितना बचाना चाहती है उतना ही उस सिपाही को भी। उसका दिल दोनों के लिए एक है। अत: उसमें किसी भी सिपाही की माँ को ढूँढ़ा जा सकता है।

(iv) सुभद्रा कुमारी चौहान मूलत: राष्ट्रीय सांस्कृतिक धारा की कवयित्री हैं। परन्तु सामाजिकता पर ध्यान गया है उनका। कवयित्री इस कविता में एक माँ की पुत्र की असमय मृत्यु होने पर उसकी स्थिति क्या हो सकती है उसी का चित्रण किया है इस कविता में। कवयित्री कहती है कि आज पूरा विश्व, संसार हँस रहा है, सभी ओर खुशी की लहर है परन्तु इस विश्व में सिर्फ एक मैं दु:खी हूँ जो मेरा 'खिलौना' खो गया है। 'खिलौना' यहाँ पुत्र के प्रतीक के रूप में आया है। एक बच्चे के लिए सबसे प्यारी वस्तु उसका खिलौना होता है। यदि उसका खिलौना खो जाता है तो वह दुखी हो जाता है परन्तु जैसे ही मिलता है खुशी का ठिकाना न रहता है। उसी तरह एक माँ के लिए पुत्र खिलौने की भाँति ही होता है। माँ जिधर से आती है बच्चे को पुचकारती हुई आती है। बच्चा उसकी जिन्दगी का अहम हिस्सा हो जाता है। वह एक पल भी उसके बिना रह नहीं पाती। माँ अपने पुत्र को कहीं जाने नहीं देती इसलिए कि उसे कहीं सर्दी न लग जाए। अत: आँचल की ओट में अपने गोद से नहीं उतारती। पुत्र जैसे ही 'माँ' पुकारा कि माँ सब काम छोड़ते हुए दौड़ी चली आयी। ये पंक्तियाँ माँ का पुत्र के प्रति प्रगाढ़ प्रेम को दर्शाती हैं। यही नहीं बच्चा जब नहीं सोता है तब उसे थपकी दे-देकर लोरी सुनाकर सुलाती है। अपने पुत्र के मुख पर मलिनता देखकर रात भर जाग कर बिताती है।

माँ अपने पुत्र की खुशी या उसे पाने के लिए क्या-क्या नहीं करती। पत्थर जैसे अमूर्त को मूर्त मानकर उसकी पूजा करती है। कहीं नारियल, बताशे, कहीं दूध चढ़ाकर शीश नवाती है। फिर भी इतना करने के बावजूद उसका पुत्र (खिलौना) छिन ही जाता है। इसलिए वह असहाय हो जाती है। उसके प्राण व्याकुल हो जाते हैं।

उसकी शांति छिन जाती है। वह सोचती है कि मैंने अनमोल धन खो दिया है और फिर इसे मैं नहीं पा सकती। इस कारण माँ का जीवन सूना-सूना सा हो जाता है। पुत्र की याद में रोते रहना नियति बन गयी है। उसे जीवन नीरस लगने लगता है। उसे लगता है काश ! एक बार भी यदि पा जाती तो जी भरकर उसे प्यार करती। वह कल्पना करती है कि मेरे भैया, बेटे, अब माँ को छोड़कर तुम नहीं जाना। परन्तु जो विछुड़ गया वह पुन: मिलता कहाँ। अत: कवयित्री कहती है कि बेटा खोकर मन को समझाना बड़ा कठिन है। भाई-बहन, पिता सब भूल सकते हैं तुम्हें, परन्तु रात-दिन की साथिन माँ तुम्हें कैसे भूल सकती है।

(v) 'प्यारे नन्हें बेटे को' शीर्षक कविता का केन्द्रीय भाव यह है कि हर मेहनतकश व्यक्ति लोहा है तथा हर दबी कुचली, सतायी हुई तथा बोझ उठाने वाली औरत लोहा है।

(vi) 'अधिनायक' कविता का केन्द्रीय कथ्य भारतीय लोकतांत्रिक व्यवस्था पर प्रश्नचिह्न खड़ा करता है। यह ऐसी व्यवस्था पर व्यंग्य करता है जो सत्ताधारी वर्ग के राजसी ठाट-बाट, भड़कीले रोब-दाब के साथ अपना गुणगान करवा अपने को 'अधिनायक' (तानाशाह) सिद्ध कराना चाहती है।

6. (i) **शीर्षक : भाषा का महत्त्व**

संसार में जितना मनुष्य का महत्त्व है, उतना ही उसकी भाषा का है। भाषा महासागर की बूँद के समान है, जिसका कोई हद या अनहद नहीं है। लोक और वेद इसी से समतोल है। वेद में जितनी गहराई है लोक में भी समायी हुई है। लोक और वेद दोनों भाषा का नहीं, आदमी का दो छोर है। जिसकी गति दोनों में है। मनुष्य जो जानता है, वह हद और जो नहीं जानता है वह भाषा की अनहद है।

(ii) **शीर्षक : वाक्पटुता**

मनुष्य अपने जीवन में अपने बोलने के तरीके से जाना जाता है। जिस मनुष्य के वाणी में मिठास है कठिन स्थिति में भी अपनी स्थिति को अपने अनुकूल रखता है और जो मनुष्य अपनी बात को राई का पहाड़ बनाकर प्रस्तुत करते हैं, वह अपना अकारण नष्ट किया करते हैं। जो मनुष्य वाणी में संयम और संतुलन तथा मिठास रखते हैं वह मरने के पश्चात् भी लोगों की स्मृतियों में रहते हैं।